प्राचीन यूनान की सामाजिक अवस्था

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – III Year

Paper – VII (Ancient Civilizations (Down to 600 B.C.)

प्राचीन यूनान का इतिहास प्राचीन विश्व के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राचीन विश्व सभ्यता के इतिहास में यूनान की देन अद्‌वितीय है। इसी प्रकार से प्राचीन यूनान की सामाजिक अवस्था भी उस समय के हिसाब से ठीक थी। सामाजिक वयवस्था की आधारशिला पारिवारिक व्यवस्था थी। परिवारों के समूह से ही समाज का निर्माण होता था। तत्कालीन समाज की राजनैतिक शक्ति भी परिवार में ही निहित थी। इस काल में यूनानी गांवों में रहते थे, जो कई परिवारों के समूह होते थे। परिवार का प्रमुख सदस्य परिवार के सभी सदस्यों को पूर्णरूपेण अपने नियंत्रण में रखता था तथा सभी सदस्य सहर्ष उसकी आज्ञा का पालन करते थे। तत्कालीन भूमि संबंधी प्रथाओ के अनुसार भूमि का स्वामी कोई व्यक्ति नहीं, वरन् पूरा परिवार ही होता था। किसी नए प्रदेश को विजित करने के पश्चात् राजा भूमि का विभाजन विभिन्न परिवारों के बीच कर देता था। इस प्रकार प्रत्येक परिवार को अपनी भू-संपत्ति होती थी, जिसका प्रबंध परिवार का प्रमुख सदस्य किया करता था। परंतु, इस भू-संपत्ति को बेचने का अधिकार परिवार के नेता को भी नहीं था। भू-संपत्ति के साथ धार्मिक भावना भी जुड़ी हुई थी। पर परिवार के मृत व्यक्तियों को परिवार की ही भूमि में दफनाया जाता था। तत्कालीन धार्मिक

विश्वासों के अनुसार मृत-व्यक्तियों को जिस स्थान पर दफनाया जाता था, वह भूमि सदा के लिए उन्हीं की हो जाती थी। इस कारण, उस स्थान की श्रद्धापूर्वक देख भाल करना मृत व्यक्तियों के वंशजों का परम कर्तव्य माना जाता था।

उस समय भी परिवारों के कई समूह हुवा करते थे, जिन्हें फ़ैट्रा (Phratra) या बिरादरी कहा जाता था। एक विरादरी के लोग एक प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करते थे। ये धार्मिक अनुष्ठान उनकी | भावनात्मक एकता के प्रतीक थे। कई ग्रामों के समूह को फाइले (Phyle) या ट्राईब (Tribe) कहा जाता था। जिस प्रकार प्राचीन भारत के ऋग्वैदिक काल में कुलों के समूह को ग्राम तथा ग्रामों के समूह को विश और विशों के समूह को 'जन' कहते थे, उसी प्रकार इस काल की ट्राइव को भी 'जन' कहा जा सकता है। जिस प्रकार ऋग्वैदिक राज्य का प्रजा वर्ग जन कहा जाता था, उसी प्रकार होमर-युग की ट्राइव तत्कालीन राज्य की समस्त प्रजा जन ही थी। जिस भू-भाग में ट्राइव निवास करती थी उस भू-भाग को डाम (Deme) कहा जाता था। दूसरे राजाओं द्वारा विजित होने के पश्चात् भी ट्राइव तथा डीम का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहा। कुलों के आधार पर ग्रामों का निर्माण तथा ग्रामों के समूह से जन का निर्माण वस्तुतः प्रत्येक आर्य सभ्यता की प्रारंभिक सामाजिक अवस्था की विशेषता थी।

प्राचीन भारत, प्राचीन रोम एवं प्राचीन जर्मनी में भी प्रारंभिक सामाजिक व्यवस्थाएँ इसी प्रकार की थीं। चूंकि होमर-युग के यूनानी भी आर्य थे, अतः उनकी सामाजिक व्यवस्था का अन्य आर्य-संस्कृतियों के समान होने में कोई आश्चर्य नहीं है। समाज चार वर्गों में विभक्त था। सबसे सम्मानित कुलीन वर्ग था। कुलीन वर्ग के पश्चात् स्वतंत्र खेतिहर थे। तीसरा वर्ग स्वतंत्र श्रमिकों का था; जो अपनी मिहनत के द्वार अपनी जीविका उपार्जित करते थे। इनको थीट्स (Thetes) कहा जाता था। निम्नतम वर दासों का था, जो या तो युद्धबंदी होते थे अथवा समुद्री लुटेरों से खरीदे जाते थे। कुलीन वर्ग के पास बहुत बड़े परिमाण में भू-संपत्ति होती थी तथा इनके पास गुलाम की भी बड़ी संख्या होती थी। युद्ध के समय यह वर्ग नेतृत्व करता था तथा अपनी वीरत एवं शौर्य के लिए प्रसिद्ध था। समाज का

दूसरा वर्ग कृषकों का था, जो अपनी सीमित भू पर कृषि के द्वारा जीवन-निर्वाह करता था। दासों के साथ भी सद्व्यवहार किया जाता था

मुख्यरूप रूप से होमर युग की सभ्यता ग्रामीण सभ्यता थी। इस सभ्यता के अंतिम दिनों में नगरों का विकास प्रारंभ हो गया। ग्रामीण सभ्यता होने के कारण सामाजिक जीवन जटिलताओं सादगी से भरा था। राजा एवं कुलीन लोग भी साधारण व्यक्तियों की तरह शारीरिक श्रम करते थे। उच्च वर्ग की स्त्रियाँ भी शारीरिक श्रम करती थीं। लोगों के भोजन भी सीधे-सादे तथा आवश्यकताओं के अनुरूप थे। मदिरापान की प्रथा थी, पर कि मदिरापान निंदनीय माना जाता था। प्रीतिभोजों के अवसर पर संगीत के द्वारा अतिथियों का मनोरंजन किया जाता था।

स्त्रियों का समाज में आदर होता था, पर उनके कारण कभी-कभी लड़ाइयाँ भी हो जाती और टाय का युद्ध इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। इस समय किसी बात को लेकर दो जनों या टाइब में युद्ध होना स्वाभाविक बात थी। इसी कारण, कुलीन वर्ग के सदस्य एवं सरदार युद्ध के लिए सदैव तैयार रहते थे। यनानी सभ्यता की इस प्रारंभिक अवस्था में अभी कानूनों का विकास नहीं हुआ था। वास्तव में, राज्य अभी तक समाज में भिन्न नहीं हो पाया था। समाज का नियंत्रण धार्मिक विश्वासों तथा सामाजिक प्रथाओं के आधार पर ही होता था। तत्कालीन विश्वासों के अनुसार कुछ अपराधों की सजा देवताओं द्वारा दी जाती थी किसी, व्यक्ति की हत्या के अपराधी को दंड देना, मृत व्यक्ति के परिवार के सदस्यों का उत्तरदायित्व माना जाता था। राजा का न्याय वास्तव में एक पंच-निर्णय मात्र था।

उस समय भी समाज में कुछ विलक्षण प्रथाएँ भी प्रचलित थी, जो तत्कालीन सामाजिक विचारों के अनुसार मान्य थीं। एक अजनबी व्यक्ति किसी नए स्थान में मारा जा सकता था पर यदि वह | उस नए स्थान के किसी व्यक्ति का अतिथि बन जाए, तो उसको कोई मार नहीं सकता था। समुद्री यात्रियों और जहाजों को लूटना भी बुरा नहीं समझा जाता था। बहुत से लोगों की जीविका इस प्रकार की लूट से चलती थी। तत्कालीन विचारधारा के अनुसार ऐसा कार्य निंदनीय नहीं माना जाता था।